श्रम विभाग

दिनांक 12 ग्रगस्त, 1986

सं० मो०वि०/ययुना/91/86/287.93 — चूंकि हरियाणा के राज्यसल की राय है कि मैं० हैन्तन इंजिनियरज (यमुना गैंसिज यूनिट, सरदाना नगर), अन्वाला रोड़, जगाधरी, के अमिक औ एजाक ग्रहमंद, पुत्र औ जमारतो, मार्मत, डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा, इन्टक आफिस, बाह्मण धर्मशाला, रेजवे रोड, जगाधरी, तस उत्तके प्रवन्त्र को के मध्य इसमें इत्तके बाद लिखित मानते में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछ राय समझते हैं;

इसिलए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रथोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिनृवना स्व 3(44)84-3-अन, दिनांक 18 अभैत, 1934 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अन न्यायालय, अम्बाला, को विवादयस्त या उन्नमें सुसंगत या उन्नमें सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त अवन्ध को तथा अभिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री एनाक ग्रहमद की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? तं ग्रो विविध्यमुना 92/86/28804 -- बूंकि हरियाणा के राज्यान की राज है कि मैं है है कि वैदेश इंजिनियरन (यनुना गैसिन पूनिट, सरदाना नगर), ग्रम्बाला रोड़, जगाधरी, के श्रांमक श्री राज पाल, पुत्र श्री बाबू राम, मार्फन डा॰ सुरेन्द्र कुमार शर्मा, इन्टक ग्राफिस बाह्मण धर्मशाला, रेलवे रोड़, जगाधरी तथा उसके प्रवन्वकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मानते में कोई श्रीबोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना वाछंगीय समझते हैं;

इसलिए, अब, मोदोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिकूचना सं० 3(44) 84-3-अन, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उनते अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित अन न्यायालय, अन्याला, को विवादमस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामना न्यायालये एवं पंचाट तीन मान में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उसत प्रवन्त्रकों तथा अभिक के बीच यातो विवादमस्त मामना है। या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राज पाल की सेवाओं सनापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदिनहीं, तो वह किस राहत का हकतर है ? सं ग्रो विव / यमुना / 39/86/28810 — चूंकि हरियाणा के राज्यभाल की राय है कि मैं डैन्सन इंजिनियरज (यमुना गैसिज यूनिट, सरदाना नगर), अम्बाला रोड़, जगाधरी, के श्रीमक श्री गुरनाम सिंह, पुत्र श्री फूल चन्द, मार्फत डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा, इन्टक श्राफिन, ब्राह्मण धर्मगाला, रेजरे रोड़, जगाधरी तथा उसके प्रवत्थकों के सध्य इसमें इसके बाद निखित मामले में कोई श्रौधोगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेनु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिये, यब, श्रीयोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की बारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम त्यायालय, अम्बाला, को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निद्धि करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री गुरनाम सिंह की मेबाग्रों का समापन न्यायोचित तया ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत,का हकदार है?

सं यो वि०/यमुना/90/86/28816 — न्वं कि हरियाणा के राज्याल को राय है कि मैं डेन्सन इंजिनियरज (यमुना गैसिज यूनिट, सरदाना नार), अन्वाता रोड़, जनावरों, के अभिक और अर्थ पान, पुत श्री जगीर सिंह, मार्फत हार सुरेन्द्र कुमार शर्मी, इन्टक आफिस, ब्राह्मण धर्मशाला, रेलवे रोड़, जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ओदोणिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समअते हैं;

इसलिये, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिस्चना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रेंल, 1984, द्वारा उक्त ग्रिधिन्यम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाना, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नी ने लिखा मानता न्यायिनग्रेय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—
वया श्री धर्म पाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

and an in the state of the stat